लघुकथाऐं

1. लक्ष्मी

सखी सुजाता,

हैलो! तेरा मोबाइल स्विच ऑफ है। ई–मेल भी डिलीवर नहीं हो पा रहा, इसलिए पत्र लिख रही हूँ। सच सुजाता, तू सोच रही होगी कि नगर की प्रतिष्ठित स्त्री–रोग विशेषज्ञ को क्या तनाव, परेशानी हो सकती है? सुन आजकल बड़े घर की बहुओं के गर्भ में पल रही भ्रूण के एबार्शन हेतु मुझे मोटी धन राशि का लालच दिया जा रहा है, पर मेरी अन्तरात्मा नहीं मानती कि किसी के घर आंगन में जाने वाली लक्ष्मी की मैं हत्या करूं? तुम्हारे प्रिय जीजू यानी मेरे पति परमेश्वर मुझ पर क्रोध करते हैं कि मैं घर आ रही लक्ष्मी को ठुकरा रही हूँ, पर तू ही बता, किसी लक्ष्मी की हत्या कर खून से सनी लक्ष्मी की नोटों की गड्डी मुझे क्या चैन से रहने देगी? मैंने निर्णय लिया है कि पति परमेश्वर कुछ भी कहते रहें, मैं ये पाप नहीं करूंगी। तू क्या सोचती है इस बारे में? पत्र लिखा है बहुत घुटन में। मिलते ही फोन कर। बाय!

सहेली – नीरजा

2. सम्मान

मित्र राज कमल,

नमस्ते। फलते–फूलते, बच्चों के माता पिताओं से मोटी फीस व गुप्त रूप से डोनेशन लेने वाले शहर के नामी पब्लिक स्कूल में आपके द्वारा कमरों का निर्माण हुआ, मंत्रीजी से लोकार्पण हुआ, स्कूल प्रबधन ने आपका सम्मान किया, बधाई।

अपनी क्या सुनाऊँ ? मां की पुण्य तिथि पर समीप के गांव के स्कूल में निर्धन छात्राओं हेतु चार सीलिंग फेन दिए, तो वहां के स्टाफ ने मुझे प्रशस्ति पत्र दिया, गांव के जंगली फूलों के बने हाथ से बनाए गए गुलदस्ते से मेरा सम्मान किया। मंत्री तो कोई नहीं आया, पर समारोह में स्कूल की मेडम ने जब धन्यवाद दिया तो उनका गला भर आया था एवं आंखें भीग गई थी। बस मुझे तो इतना सा ही सम्मान मिला।

तुम्हारा सम्मान निश्चय ही सफल है, पर मुझे अपने पत्रं पुष्पं से मिले प्यार–स्नेह वाले निर्मल सात्विक सम्मान की भी सार्थकता तो महसूस हो ही रही है। सम्पर्क बनाए रखना।

मित्र – अरूण प्रसाद

3. बेवकूफ

दीपक,

स्नेह। लाखों रूपए प्राविडेंट फंड से उधार लेकर मैंने तुम्हें आई.आई.टी. की उच्चतम स्तर की शिक्षा दिलवाई। लाखों डालर के अंधे मोह में तुम विदेश चले गए एवं अपनी पसंद की जीवन साथी भी चुन ली। बधाई एवं आशीर्वाद। पर पुत्र, सोचना कि जिस पिता ने तुम्हें शिक्षित करवाया, जिस देश के संस्थान ने तुम्हें शिक्षा दी, क्या उस पिता या देश के जीवन की गुणवत्ता में कुछ सुधार हो, क्या तुम्हें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए था ? तुम्हारी शिक्षा का अनुसंधान वाला लाभ विदेश की धरती पर जा रहा है, क्या भारत माता उसी हाल में ही जीती रहेगी एवं 65 वर्ष की उम्र में तुम्हारे वृद्ध विधुर पापा क्या बाई के हाथ की कच्ची रोटी एवं जली हुई सब्जी ही खाते रहेंगे? पितृ–ऋण व देश–ऋण तुम पर है, क्या तुम्हें एहसास होगा? सोच कर सही निर्णय लेना।

बेवकूफ पिता – मनोज

4. नाटक

कविता बेटी, स्नेह। परेशान क्यों होती हो? तुम्हारी मम्मी के इस संसार छोड़ने के पश्चात नाते–रिश्ते बदल गए हैं, नहीं पूछ रहे हैं, तो कोई बात नहीं। समझ लो, तुम्हारे मेरे जीवन की कहानी में उनका रोल इतना ही था। कुछ नए भैया–भाभी भी तो जुड़ गए हैं ना। जीवन के नाटक में जिन पात्रों का रोल समाप्त हो जाता है, वे रंगमंच से नीचे उतर जाते हैं। कुछ नए पात्र स्टेज पर आ जाते हैं, इसे स्वीकारो। मैं तो हूँ ना। चिन्ता मत करो, बेटी। प्यार।

पापा – संजय

दिलीप भटिया, 372/201, न्यूमार्केट, रावतभाटा–323307 मोबाइल नं : 09461591498